नमाज़ियों के लिए तीस शुभसूचनायें
क़ुरआन व हदीस के प्रकाश में

[हिन्दी – Hindi – هندي]

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2012 - 1433

IslamHouse.com

﴿ ثلاثون بشارة لأهل الصلاة في ضوء الكتاب والسنة ﴾

« باللغة الهندية »

عطاء الرحمن ضياء الله

2012 - 1433

IslamHouse.com

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान करदे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

नमाज़ियों के लिए तीस शुभसूचनायें

क़ुरआन व हदीस के प्रकाश में

इस्लामी भाईयो !

ला इलाहा इल्लल्लाह व मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही के बाद जो सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य एक मुसलमान पर लागू होता है वह पाँच समय की नमाज़ें हैं : वह नमाज़ जो कि कुफ्र (अधर्म) व शिर्क (अनेकेश्वरवाद) और मुसलमान व्यक्ति के बीच अंतर है, इस्लाम और नास्तिकता के बीच फर्क़ है, जिसके बारे में परलोक के दिन सबसे पहले प्रश्न किया जायेगा, जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आँखों की ठंढक है और जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन के अंतिम क्षणों की वसीयत है, इसके अतिरिक्त यह इसकी पाबंदी और रक्षा करने वालों के लिए अपने अंदर बहुत सारी विशेषताएं, शुभसूचनाएं और बशारतें रखती है, जो एक मुसलमान को इस पर कार्यबद्ध रहने की प्रेरणा देती हैं।

अतः नमाज़ की विशेषताओं से संबंधित कुछ महान शुभसूचनायें, बशारतें – क़ुरआन व हदीस की ज़ुबानी – आपकी सेवा में प्रस्तुत की जा रही

हैं, इन–शा अल्लाह, ये आपके अंदर नमाज़ की पाबंदी करने का उत्साह पैदा करेंगी :

१- नमाज़ अल्लाह के निकट सबसे पसंदीदा अमल है :

अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं ने अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि अल्लाह के निकट कौन सा कार्य सबसे पसंदीदा है ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''नमाज़ को उसके समय पर पढ़ना।'' (सहीह बुखारी, हदीस संख्या : 527, 5970, सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 85)

२- नमाज़ मनुष्य को उसके पालनहार से जोड़ती है :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जब तुम में से कोई व्यक्ति नमाज़ पढ़ता है तो वह अपने पालनहार से सरगोशी कर रहा (सम्बोधित) होता है।'' (सहीह बुखारी, हदीस संख्या : 405, 417, 531)।

३- नमाज़ इस्लाम धर्म का स्तंभ है :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''...धर्म के मामले का मूल तत्व इस्लाम (अर्थात शहादतैन यानी ला इलाहा इल्लल्लाह व

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही) है और उसका स्तंभ नमाज़ है और उसकी पराकाष्ठ जिहाद (अल्लाह के मार्ग में संघर्ष करना) है।'' (सहीह सुनन तिर्मिज़ी, हदीस संख्या : 2616)

४- नमाज़ नूर (रौशनी और प्रकाश) है :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''नमाज़ प्रकाश है।'' (सहीह मुस्लिम, सहीहुल जामे, हदीस संख्या : 925)

५- नमाज़ निफाक़ (पाखण्ड) से पवित्रता का प्रतीक है :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''मुनाफिक़ों पर फज्र और इशा की नमाज़ से अधिक कठिन और भारी कोई नमाज़ नहीं, और यदि उन्हें पता चल जाए कि उन दोनों नमाज़ों के अंदर क्या (भलाई) है तो वे उन दोनों (नमाज़ों) में अवश्य आयेंगे भले ही उन्हें घुटनों के बल घिसट कर ही क्यों न आना पड़े।'' (सहीह बुखारी, हदीस संख्या : 627).

६- नमाज़ नरक की आग से बचाव है :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जिस व्यक्ति ने भी सूर्य उगने से पूर्व और सूर्यास्त से पूर्व नमाज़ पढ़ी वह आग (नरक) में

कदापि प्रवेश नहीं करेगा।'' इससे अभिप्राय फज्र और अस्र की नमाज़ है। (सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 634).

७- नमाज़ अश्लीलता (बेहयाई) और बुरे कामों से रोकती है :

अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है :

﴿اتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ ﴾ (العنكبوت :٤٥)

''जो किताब (यानी कुरआन मजीद) आपकी ओर वह्य की गई है उसकी तिलावत (अनुसरण) कीजिए और नमाज़ क़ायम कीजिए, नि:संदेह नमाज़ अश्लीलता और बुराई से रोकती है।'' (सूरतुल अंकबूत : **४५**).

क्योंकि जब मुसलमान व्यक्ति नमाज़ को कायम करता है और खुशू व खुज़ू के साथ उसके अरकान व शराइत को पूरा करता है, तो उसका दिल स्वच्छ, पवित्र और प्रकाशमान हो जाता है, उसके ईमान में वृद्धि हो जाती है, नेकियों की अभिरूचि बढ़ जाती है और बुराईयों की इच्छा कम

या शून्य हो जाती है। इस तरीक़े पर नमाज़ की पाबंदी करना अवश्य ही नमाज़ी को अश्लीलता और बुरे कामों से रोकेगी।

८- नमाज़ महत्वपूर्ण कामों में सहायक है :

अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है :

﴿وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ﴾ (البقرة : ٤٥)

"और तुम सब्र और नमाज़ के द्वारा मदद प्राप्त करो।" (सूरतुल बक़रा : **४५**).

तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब कोई मामला पेश आता था तो आप नमाज़ का सहारा लेते थे। (फत्हुल बारी 1/211)

९- जमाअत के साथ (समूह में) नमाज़ पढ़ना, अकेले नमाज़ पढ़ने से श्रेष्ठतर है :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "जमाअत के साथ (यानी समूह में) पढ़ी जाने वाली नमाज़ अकेले पढ़ी जाने वाली नमाज़

से सत्ताइस दर्जा (गुना) बेहतर है।'' (सहीह बुखारी, हदीस संख्या : 645, सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 650).

१०- नमाज़ पढ़ने वाले के लिए फरिश्ते दया और क्षमा की दुआ करते हैं :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जब तक तुम में से कोई व्यक्ति अपनी उस नमाज़ पढ़ने की जगह (नमाज़ स्थल) में होता है जहाँ उसने नमाज़ पढ़ी है, फरिश्ते (स्वर्गदूत) उसके लिए दुआ करते रहते हैं जबतक कि वह अपवित्र न हो जाए (याना उसका वुज़ू टूट न जाए), वे कहते हैं : ऐ अल्लाह ! तू उसे क्षमा कर दे, ऐ अल्लाह ! तू उस पर दया कर।'' (सहीह बुखारी, हदीस संख्या : 445, सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 649).

११- पाप के क्षमा कर दिए जाने की शुभसूचना :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जिसने नमाज़ के लिए वुज़ू किया और संपूर्ण वुज़ू किया, फिर फर्ज़ नमाज़ के लिए चलकर गया और लोगों के साथ या जमाअत (समूह) के साथ या मस्जिद में नमाज़ पढ़ी, तो अल्लाह तआला उसके पाप (गुनाहों) को क्षमा कर देगा।'' (सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 232).

१२- नमाज़ी का शरीर गुनाहों से पवित्र हो जाता है :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''तुम्हारा क्या विचार है कि यदि तुम में से किसी व्यक्ति के द्वार पर एक नदी हो जिसमें वह प्रति दिन पाँच बार स्नान करता हो, क्या उसके शरीर पर कुछ मैल बाक़ी रहेगी ?'' सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने उत्तर दिया : उसकी कुछ भी मैल बाकी नहीं रह जायेगी। आप ने फरमाया : ''तो यही उदाहरण पाँच नमाज़ों का भी है, उनके द्वारा अल्लाह तआला गुनाहों को मिटा देता है।'' (सहीह बुखारी, हदीस संख्या : 528, सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 667).

१३- स्वर्ग में आतिथ्य तैयार करने की शुभसूचना :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जो व्यक्ति सुबह या शाम के समय मस्जिद जाता है तो अल्लाह तआला उसके लिए स्वर्ग में मेहमानी (आतिथ्य) तैयार करता है जब भी वह सुब्ह या शाम के समय जाता है।'' (सहीह बुखारी, हदीस संख्या : 662, सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 669)..

१४- मस्जिद की ओर जाने पर एक पग पर एक गुनाह मिटता है और दूसरे पग पर एक पद ऊँचा होता है :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जिसने अपने घर में पवित्रता हासिल की, फिर अल्लाह के घरों में से किसी घर की ओर रवाना हुआ ताकि अल्लाह की अनिवार्य की हुई फर्ज़ नमाज़ों में से किसी फर्ज़ नमाज़ को अदा करे तो उसका एक पग एक पाप को मिटाता है और दूसरा पग एक पद ऊँचा करता है।'' (सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 666).

१५- नमाज़ के लिए जल्दी आने वालों के लिए बड़े पुण्य की शुभसूचना :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''अगर लोगों को पता चल जाए कि अज़ान देने और पहली सफ में नमाज़ पढ़ने की क्या विशेषता और महान पुण्य है, फिर वे उसे प्राप्त करने के लिए कुरआ डालने के अलावा कोई समाधान न पायें तो वे उस पर अवश्य ही कुरआ अंदाज़ी करेंगे, तथा अगर उन्हें पता चल जाये की नमाज़ की ओर जल्दी आने में क्या अज्र व सवाब (पुण्य) है तो वे उसकी ओर अवश्य पहल करेंगे।'' (सहीह बुखारी, हदीस संख्या : 615, 689, सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 437).

१६- नमाज़ की प्रतीक्षा करने वाला निरंतर नमाज़ की अवस्था में होता है :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "तुम में से कोई भी आदमी निरंतर नमाज़ (के पुण्य) की हालत में होता है जब तक कि नमाज़ उसे रोके रहती है, उसे अपने परिवार के पास लौटने से केवल नमाज़ रोकती है।" (सहीह बुखारी, हदीस संख्या : 659, सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 649).

१७- जिसकी आमीन फरिश्तों की आमीन से मिल गई उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिए जायेंगे :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "जब तुम में से कोई व्यक्ति आमीन कहे और आसमान में फरिश्ते भी आमीन कहें और एक की आमीन दूसरे की आमीन के अनुरूप हो जाए (यानी दोनों आमीन एक ही समय में हों) तो उसके पिछले गुनाहों को क्षमा कर दिया जायेगा।" (सहीह बुखारी, हदीस संख्या : 781, सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 410).

१८- अल्लाह सर्वशक्तिमान के शरण और सुरक्षा की शुभसूचना :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "जिस व्यक्ति ने सुब्ह (फज्र) की नमाज़ पढ़ी वह अल्लाह के ज़िम्मा और शरण में है, तो ऐ

आदम के बेटे (यानी मनुष्य)! देख कहीं अल्लाह तआला तुझ से अपने ज़िम्मा में से किसी चीज़ की मांग न करे।'' (सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 657).

इसका अर्थ यह है कि ऐसे व्यक्ति से छेड़ छाड़ न करो और उसे नुकसान या तकलीफ न पहुँचाओ जिसे अल्लाह का शरण और अमान प्राप्त है। दूसरा अर्थ यह है कि फज्र की नमाज़ छोड़ने से बचो जिसकी वजह से तुम्हें अल्लाह का शरण प्राप्त हुआ है, ताकि ऐसा न हो कि अल्लाह तुम से अपना शरण वापस ले ले। इस हदीस में नमाज़ियों को छेड़ने वालों के लिए कड़ी धमकी है तथा फज्र की नमाज़ में उपस्थित होने की रूचि दिलाई गई है।

१९- परलोक के दिन भरपूर प्रकाश की शुभसूचना :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''अंधेरे में मस्जिदों की ओर जाने वालों को क़ियामत के दिन मुकम्मल रौशनी की शुभसूचना दे दो।'' (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, सहीहुल जामे, हदीस संख्या : 2823).

२०- पाबंदी के साथ फज्र और अस्र की नमाज़ पढ़ने वाले के लिए स्वर्ग की शुभसूचना :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जो व्यक्ति दो ठंडे समय की नमाज़ें (यानी फज्र और अस्र) पढ़ता रहा वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा।'' (सहीह बुखारी, हदीस संख्या : 574, सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 635).

२१- पुल सिरात पार करके स्वर्ग में पहुँचने की शुभसूचना :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''मस्जिद हर परहेज़गार का घर है, और अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति के लिए जिसका घर मस्जिद हो राहत व दया और पुल सिरात पार कर अल्लाह तआला की प्रसन्नता स्वर्ग में पहुँचने की शुभसूचना दी है।'' (तब्रानी, अल्लामा अल्बानी रहिमहुल्लाह ने इसे सही करार दिया है).

२२- नमाज़ उसकी पाबंदी करने वाले के लिए क़ियामत के दिन नजात का कारण है :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ के महत्व का उल्लेख करते हुए फरमाया : ''जिसने नमाज़ की रक्षा की वह उसके लिए क़ियामत के दिन रौशनी, प्रमाण और नजात का कारण होगी, और जिसने उसकी रक्षा नहीं की उसके लिए न कोई रौशनी होगी, न प्रमाण

होगा, और न ही नजात का कोई साधन होगा, और क़ियामत के दिन वह क़ारून, फिरऔन, हामान और उबै बिन खलफ (जैसे कुख्यात नास्तिकों) के साथ होगा।'' (मुसनद अहमद, दारमी, अल्बानी ने मिशकात (हदीस संख्या : 578, 1/127) में इसे सहीह कहा है).

२३- नमाज़ गुनाहों के लिए कफ्फारा (परायश्चित) है :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''पाँच समय की नमाज़ें, एक जुमा दूसरे जुमा तक, और एक रमज़ान दूसरे रमज़ान तक, उनके बीच होने वाले गुनाहों के लिए कफ्फारा (परायश्चित) है, जबकि बड़े गुनाहों से बचा जाय।'' (सही मुस्लिम, हदीस संख्या : 233).

२४- नमाज़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ स्वर्ग में प्रवेश करने के महान कारणों में से है :

रबीआ बिन कअब अल-असलमी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रात बिताता था और आप के वुज़ू का पानी लाया करता और आपकी आवश्यकताएं पूरी कर दिया करता था, तो आप ने मुझसे फरमाया : ''तुम माँगो।'' तो मैं ने कहा : मैं स्वर्ग में आपकी संगत का प्रश्न करता हूँ, आप ने फरमाया : ''क्या इसके अलावा कोई अन्य माँग है ?'' मैं ने कहा : बस वही। तो

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''तो तुम अधिक सज्दों (यानी अधिक से अधिक नफ्ली नमाज़ों) के द्वारा अपने आप पर मेरी मदद करो।'' (सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 489).

२५- नमाज़ के कारण अल्लाह तआला दो नमाज़ों के बीच होने वाले गुनाहों को क्षमा कर देता है :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जो भी मुसलमान व्यक्ति वुज़ू करता है और अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर कोई नमाज़ पढ़ता है तो अल्लाह तआला उसकी उस नमाज़ और उसके बाद वाली नमाज़ के बीच होने वाले गुनाहों को बख्श देता है।'' (सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 227).

२६- उसके पिछले गुनाह क्षमा कर दिए जाते हैं:

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जो भी मुसलमान आदमी किसी फर्ज़ नमाज़ के समय को पाता है, फिर उसके लिए अच्छी तरह वुज़ू करता है, उसके अंदर खुशू व खुज़ू से काम लेता है और उसके रूकूअ को मुकम्मल करता है तो यह नमाज़ उसके पिछले गुनाहों के लिए कफ्फारा बन जायेगी, जबतक कि वह कोई बड़ा गुनाह न करे,

और यह जीवन भर होता रहता है।'' (सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 228).

२७- नमाज़ की प्रतीक्षा करना अल्लाह के रास्ते में रिबात है :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ के बारे में न बतलाऊँ जिसके द्वारा अल्लाह सर्वशक्तिमान गुनाहों को मिटा देता है और पदों को ऊँचा कर देता है ? सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा : ऐ अल्लाह के पैगंबर ! क्यों नहीं, आप ने फरमाया : ''नापसंद होने और कष्ट के बावजूद मुकम्मल वुज़ू करना, मस्जिदों की तरफ पगों की अधिकता और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ की प्रतीक्षा करना, तो यही रिबात है, तो यही रिबात है।'' (सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 251) (रिबात का मतलब है : दुश्मनों से हिफाज़त के लिए सीमा की पहरेदारी करना, यह एक प्रकार का जिहाद है। इसी प्रकार उपर्युक्त कामों की पाबंदी करना भी जिहाद के समान है)।

२८- नमाज़ की ओर जाने का अज्र व सवाब मोहरिम हाजी के अज्र व सवाब (पुण्य) के समान है :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जो व्यक्ति अपने घर से वुज़ू बनाकर किसी फर्ज़ नमाज़ के लिए निकला तो उसका अज्र व सवाब मोहरिम हाजी के अज्र व सवाब के सामान है, और जो व्यक्ति चाश्त की नमाज़ के लिए निकला, उसे केवल वही नमाज़ थकाती (या निकलने पर उभारती) है तो उसका अज्र व सवाब उम्रा करने वाले के अज्र व सवाब के समान है, और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ जिनके बीच बेकार बात न हो वह इल्लीईन में लिखी जाती है।'' (अबू दाऊद, अल्बानी ने इसे हसन कहा है, सहीह अबू दाऊद, हदीस संख्या : 567, सहीहुल जामे, हदीस संख्या : 6228).

२९- जो व्यक्ति नमाज़ से पीछे हो गया जबकि वह नमाज़ियों में से है तो उसके लिए जमाअत के साथ नमाज़ में हाज़िर होनेवालों के समान अज्र व सवाब है :

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जिस व्यक्ति ने वुज़ू किया और अच्छी तरह वुज़ू किया, फिर नमाज़ के लिए गया तो लोगों को इस हाल में पाया कि वे नमाज़ पढ़ चुके थे तो अल्लाह तआला उसे उन लोगों के समान अज्र व सवाब प्रदान करेगा जिन्हों ने वह नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ी है, और यह उनके अज्र व सवाब में कोई कमी नहीं करेगा।'' (सहीह अबू दाऊद 3/99, हाकिम ने इसे सही कहा है और ज़हबी ने इस पर सहमति जताई है।).

३०- जब आदमी वुज़ू करके नमाज़ के लिए निकलता है तो वह वापस लौटने तक निरंतर नमाज़ की अवस्था में होता है :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जब तुम में से कोई व्यक्ति अपने घर में वुज़ू करे, फिर मस्जिद में आए तो वह वापस लौटने तक नमाज़ (के पुण्य) की हालत में होता है, अतः वह ऐसा न करे।'' और आप ने अपनी अंगुलियों के बीच तश्बीक (एक हाथ की अंगुलियों को दूसरे हाथ की अंगुलियों में दाखिल) किया। अर्थात कोई बेकार कार्य न करे। (सहीह इब्ने खुज़ैमा, अल्लामा अल्बानी ने इसे सहीह कहा है, सहीहुल जामे, हदीस संख्या : 445)